गंधार शैली में बौद्ध कला

पवनेन्द्र तिवारी
लेक्चरर (पेन्टिंग)
फाईन आर्टस बिभाग
स्वामी विवेकानन्द सुभारती
बि.वि., मेरठ

भारतीय कला के इतिहास मे गंधार कला के तिथिक्रम विषय और शैली का बहुत महत्व है। गंधार कला में यद्यपि बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित अनेक दृश्यों का अंकन किया गया है।

गंधार शैली से सम्बन्धित दूसरा महत्वपूर्ण प्रश्न बुद्ध मूर्ति के प्रथम जन्म का है। कई पश्चिमी विद्वान बुद्ध मूर्ति के प्रथम निमार्ण का क्षेय गंधार कला को देते रहे है। उनके मतानुसार यूनानी कला के प्रभाव से गंधार शिल्पियों ने पहले–पहल बुद्ध प्रतिमा का निमार्ण किया। प्रतिमा शास्त की दृष्टि से गंधार कला की विशेशताएँ है– बुद्ध के जीवन की घटनाएँ बुद्ध और बोधिसत्व की मूर्तिया, जातक कथाएँ यूनानी देव–देवी और गाथाओ के दृश्य , भारतीय देवता और देवियाँ वास्तु सम्बधी विदेशी विन्यास, भारतीय अलंकरण एवं यूनानी, ईरानी और भारतीय अभिप्राय एवं अलंकरण गंधार कला में बुद्ध की जीवन घटनाओं के शिलापट्ट अत्यधिक है इनकी शैली भारतीय कला के कई केन्द्रो में उकेरे हुए दृश्यों से अधिक सजीव है।

गंधार कला मे गचकारी के मस्तक और बुद्ध और बोधिसत्व मूर्तियाँ बहुत प्रशंसित हुई है उनमें से कुछ उतनी ही श्रेष्ठ है जितनी बुद्ध कला भी सर्वोत्तम मूर्तियाँ। इसके फलस्वरूप भगवान बुद्ध की छवियाँ दुनिया मूर्ति या चित्र के रूप में अंकित की जाने लगी और बुद्ध के अंकन पर कोई धार्मिक प्रतिबंधन रहा। कनिश्क काल मे बुद्ध की मूर्तिया बनवायी गई। इन मूर्तियो की शैली यूनानी अधिक थी। इस प्रकार की मूर्तियाँ पेशावर रावलपिडी, तक्षशिला आदि शैलो में बनायी गई। यह क्षेत्र गांधार राज्य की सीमा के अन्तर्गत थे अतः इस शैली को गंधार शैली के नाम से पुकारा गया है। इन मूर्तियो का विशय भारतीय–बौद्ध है परन्तु इस शैली पर यूनानी तथा रोमन छाप है। गंधार कला मे यद्यपि बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित अनेक दृश्यो का अंकन किया गया है। परन्तु बुद्ध और बोधिसत्व के मुख्य अध्यात्म–भावना से शून्य है और उनमें बुद्ध की उस ध्वनि का आभाव है जो मथुरा की अन्तर्मुखी बुद्ध मूर्तियों मे पायी जाती है गंधार शैली की बोधिसत्व की मूर्तिया आभूशणो से इतनी अलंकृत है कि वह एक बौद्ध भिक्षु की अपेक्षा यूनानी राजाओं की मूर्ति ज्यादा तर दिखती है।

गन्धार कला का नाम एवं स्वरूप–: गान्धार कला अपनी प्रभूत सामग्री के लिए विख्यात है। मूर्तियों का निमार्ण प्रायः गहरे भूरे स्लेटी पत्थर मे हुआ है परन्तु अपेक्षाकृत बाद मे मिट्टी एवं प्लास्टर की (टेरा कोटा / पाशाण) की मूर्तियाँ बनाई गई इस कला शैली के अस्तित्व मे आने से पहले जातक कथाओ व बुद्ध के जीवन की घटनाओं को पत्थर पर उकेरा तो जाता था, लेकिन बुद्ध को मानव के रूप मे मूर्ति न बनाकर उनकी उपस्थिति प्रतीको के माध्यम से की जाती थी जैसे हाथी वृषभ, अश्व बोधिसत्व, छत्र, स्तप, चरण चिन्ह धम चक्र, खाली सिंहासने आदि, लेकिन कुषाण युग तक आते–आते बुद्ध के निमार्ण में प्रवृन्त हुए।

इसी समय मथुरा संप्रदाय की बुद्ध मूर्तियो के प्रभाव से गन्धार मे भी बुद्ध हस्त मुद्राओ पर विशेश ध्यान दिया गया। गोद मे रखे गये दोनो हाथ एवं बन्द आखें ध्यानावस्था पहली तथा बीच की अंगुलियाँ उठी हुई हाथ तक नीचे की ओर उंगुलियाँ उठी हुई अभय हथेलियाँ एक दुसरे के उपर घुमाने की मुद्रा मे उपदेश या धर्म चक्र प्रवर्तन तथा दाहिनी हथेली से पृथ्वी का स्पर्श 'प्रबोध का प्रतीक माना गया। गन्धार कला की विषयवस्तु–: सम्राट अशोक के काल में बौद्ध धर्म ने इस क्षेत्र में प्रवेश किया। कुषाण शासक 'प्रथम कनिष्क' के बौद्ध धर्म के प्रति झुकाव के कारण उसके शासन काल में बौद्ध विषयों का व्यापक रूप से शिल्पांकन होना स्वभाविक था गन्धार शैली के शिल्पकार यद्यपि ग्रीक थे और गन्धार कला पर भारतीय मूर्ति शैली की छाप है। अर्थात यह शैली यूनानी है। लेकिन विषय तो सर्वदा भारतीय ही है।

गान्धार कला का विषय बौद्ध है और एकमात्र बुद्ध की लीलाओ से अनुप्राणित है। यहाँ एक ओर बुद्ध के जन्म 'निष्क्रमण संबोधि लाभ' धर्म चक्र प्रवर्तन 'परिनिर्वाण' सरीखे बौद्ध विषयों का अंकन है।

बौद्ध विशयों पर 'माया देवी का स्वप्न' उनका लुम्बिनी उद्यान मे जन्म 'सिद्धार्थ का जन्म' 'उनकी सप्त पदी' 'सिद्धार्थ का बोधिसत्व रूप। बोधिसत्व की शिक्षा सिद्धार्थ की विधाओ मे परीक्षा, सिद्धार्थ और यशोधरा का विवाह संसार त्याग के लिए देवी की सिद्धार्थ से प्रार्थना इत्यादि।

बौद्ध धर्म से अत्याधिक लगाव के कारण गान्धार कला मे नारी मूर्तिया है वे प्रायः बुद्ध की माता, माया देवी का ही अंकन करती है। बौद्ध धर्म मे नारी का कोई विशेश स्थान न था।

बौद्ध कला को ग्रीक प्रभाव से युक्त होने के कारण ग्रीक बौद्ध कला भी कहा गया है। इसका प्रभाव अनेक अभिप्रायों के रूप मे प्रकट हुआ है जिनमें नारी–सिंह श्येन–सिंह तथा अन्य विचित्र राक्षस, मालालिए पंख वाले बालक नर अश्व तथा अश्वमुखी मछली आदि प्रमुख है। उपर की सूची मे बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित छाया दृश्य है। इनमे सूचित होता है कि गन्धार के शिल्पी इस दिशा में सबको पीछे छोड गए थे। उन्हे बुद्ध जीवन की छोटी–बडी सभी घटनाओं मे रूचि थी और वे मानवी गौतम के इहलोकिक स्वरूप मे रूचि प्रदर्शित कर रहे थे। साथ ही बुद्ध के लोकोत्तर जीवन की ओर से भी वे निरपेक्ष न थे। यदि इन घटनाओ के साथ बुद्ध की जातक लीलाओं को मिला दिया जाय तो गन्धार कला का महान चित्र सामने आ जाता है।

इस सत्र सामग्री से स्पष्ट है कि गन्धार शैली कितनी मौलिक और बहुमुखी थी। इस दृश्यों के उकेरनें में मानवीय भावों को प्रधानता दी गई।

ध्यान मुद्रा और पधासन में बैठे हुए बुद्ध की उभयाजिक संघाटी युक्त मूर्ति जिनकी दृष्टि बाहर की और है गन्धार कला की अपनी विशेषता है। वे खडी हुई बुद्ध मूर्तियाँ भी आकर्षक है। जो दोनो कन्धो पर प्रवाह सा सिलवटें लिऐ हुए मोटी संघाटी पहने हुए है। बुद्ध के मुख पर शान्त व प्रशन्ता भाव है और वे दृश्यो से अभिन्न जान पडते है। सहरी बहलोल से प्राप्त मूर्ति जिसमे बुद्ध काश्यप को नागराज का समर्पण कर रहे है। इस कला की भाविकता का ऊँचा उदाहरण है।

गन्धार कला की विशेशताएँ–: गन्धार कला के अन्तर्गत 'बामियान' के बाद की अदभफद से भी बीस गुना अधिक ऊँचा प्रतिभाओ के निर्माण मे बौद्ध मूर्तिकला के इतिहास विशाल मूर्तियो का निर्माण की सर्वेथा नई परम्परा का श्री गणेश किया। इसका उददेश्य संभवतः बुद्ध को अतिमानव एवं महापुरूश के रूप में प्रदर्शित करना रहा होगा।

बौद्ध के जीवन दृश्यो को सजीव शैली में उकेरा गया है किन्तु बुद्ध और बोधिसत्वों की मुखाकृति आध्यात्म भावना शून्य है वस्तुतः यहाँ की मूर्ति में योगीश्वर बुद्ध की उस छवि का सर्वथा अभाव है जो मथुरा की बुद्ध प्रतिमाओं में पाई जाती है। यहाँ की मूर्ति में भावात्मकता एवं स्वाभाविकता है ही नही।

गन्धार कला की मूर्तियाँ अपनी विशेश सज्जा, अभिव्यक्ति तथा शारिरिक सुडोलता के कारण सरलता से पहचानी जा सकती है। गन्धार मूर्तिकला की एक विचित्र विशेशता यह है कि बुद्ध की प्रतिमाएँ चारो ओर से नही गढ़ी गई। उन्हें पीछे से अगढ ही छोड़ दिवा है पर सामने शिल्प इतना उत्कृश्ट है कि आगे–आगे देखने से वे चारो ओर से कोरी जान पडती है।बुद्ध के सिर पर पीछे का तेज पुंज गन्धार शैली की ही देन है। जो विदेशी आकृतियों से लिया गया है।

शैलीगत दृश्टि से विदेशी होते हुए भी इसकी आसा भारतीय है। विद्वान 'इ० बी० हैविल, जयसवाल व डा० कुमार (स्वामी)' कर कहना है कि बुद्ध मूर्ति का उदाहरण का उद्भव भारतीय शैली मे हुआ।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1, डा० अविनाश बहादुर वर्मा, अनिल वर्मा, संगीता वर्मा :– भारतीय चित्रकला का इतिहास
2, डा० रीता प्रताप :– भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास
3, वासुदेवशरण अग्रवाल :– भारतीय कला
4, डा० शहला हसन :– भारतीय एवं पाश्चात्य कला